प्रत्यय

भोजपुरी भाषा में ढेर प्रत्यय बा, जवन कवनो शब्द के अंत में जुड़ के नया शब्द बना देला। ई संज्ञा से कर्तृवाचक, सर्वनाम से संज्ञा, संज्ञा से विशेषण, विशेषण से संज्ञा, संज्ञा, से संज्ञा विशेषण से विशेषण, ऊनवाचक संज्ञा बनावें में मदत करेला। एकरा अलावा भोजपुरी में कुछ स्त्री प्रत्ययो मिलेला।

नीचे कुछ उदाहरण दिहल जाता–

सर्वनाम से संज्ञा–आइल–अपनाइत

संज्ञा से कर्तृवाचक संज्ञा– अइत–डकइत–डाका

हार–चूड़ी–चूड़ीहार, लकड़ी–लकड़ीहार।

हर–मुस से मुसहर, बाप से बपहर, मामा से ममहर।

संज्ञा से विशेषण

कातिक से कतिका, आइन–धुआँ से धुआँइन आदि।

अइसन ढेर शब्द बाड़न सँ।

विशेषण से संज्ञा

ई उपसर्ग– पियर से पिअरी, बदमाश से बदमाशी।

अई–थेथर से थेथरई, बुरबक से बुरबकई

आहट–गरम से गरमाहट, भला से भलमनसाहत।

अवती–बूढ़ से बुढ़उती।

संज्ञा से संज्ञा

अई-लरिका से लरिकाई, साधु-सधुआईं आरी-भाई-भइआरी, काजर-कजरवटा। हन-तल-तेलहन, दाल-दलहन हर- मामा-ममहर, दादा-ददहर

ई उदाहरण खातिर दहिल जाला। एकरा अलावा एइसन ढेर प्रत्यय बा, जवना से संज्ञा से संज्ञा बनावल जाला।

विशेषण से विशेषण

लाल-ललछहूँ, मइल-मलछहू-छहूँ-प्रत्यय

वाँ-पांच-पचवाँ, नौ-नउवाँ,

आठ-अठवाँ आइल-गरम-गरमाइल, बूढ़-बूढ़ाइल, जुवान-जुवाइल औठा-पहिल-पहिलौठा, आ-साठ से साठा आदि।

स्त्री प्रत्यय

कुछ शब्द अइसन होला जवना के पुल्लिंग शब्द में स्त्री-प्रत्यय लग के स्त्रीलिंग हो जाला। कुछ उदाहरण देखीं-

आइन - मिसिर से मिसराइन, मुंशी से मुंशिआइन।
आनी - जेठ से जेठानी, सेठ से सेठानी, देवर से देवरानी।
नी - घर से घरनी, डाक्टर से डाक्टरनी, चोर से चोरनी
इन - धोबी से धोबिन, कहार से कहारिन
ई - छोटका से छोटकी, बेटा से बेटी, मामा से मामी।

कृत प्रत्यय

क्रिया के मूल रूप या धातु में लागे वाला प्रत्यय कृत् प्रत्यय कहाला। एह से बनल शब्द कृदंत कहाला। भोजपुरी में अइसन ढेर शब्द बा। कुछ उदाहरण नीचे दिहल जाला-

कृदन्त संज्ञा

आरी - पूछल से पुछारी, पूजल से पुजारी।

आ - घेरल से घेरा, छेंकल से छेंका

आई - पढ़ल से पढ़ाई, छपल से छपाई, रोपल से रोआईं

आवन - परिछल से परिछावन, चुमावल से चुमावन

आँव - पोसल से पोसाँव

ऊ - झाड़ल से झाड़ू

आप - मिलल से मिलाप, छापल से छाप।

अउअल - बुझावल से बुझउअल, मनावल-मनउअल।

कृदन्त विशेषण

आइल-काटल से कटाइल, पीटल से पिटाइल।

अकड़-पीअल से पिअक्कड़, घूमल से घूमक्कड़, बूझल से बुझक्कड़

एरा-लूटल से लुटेरा

इयल – सड़ल से सड़ियल, मरल से मरिअल

आऊ – टिकल से टिकाऊ, उपजल से उपजाऊ, बेचल से बिकाऊ

उका – चोरावल से चोरउका, देखावल से देखउका

वैया – सुनल से सुनवैया, गावल से गवैया, देखल से देखवैया।

बोध प्रश्न

1. **नीचे दिहल प्रत्यय के कर्तृवाचक संज्ञा बनाईं।**

आड़ी – .....

आटा – .....

आर – .....

हार – .....

अनिया – .....

ई – .....

हर – .....

2. **नीचे लिखल संज्ञा से अलग-अलग विशेषण बनाईं।**

आ, आइल, आहुत, आउत, इआ, वइआ, गद, उई, आह, ऊ, अई,

प्रत्यय के प्रयोग करीं-जैसे-पानी से घनिया।

3. ई, अई, आइत, आइट, अउती उपसर्ग से विशेषण शब्द, संज्ञा बनाईं। जैसे-पिअर-पिअरी।

अई, अउती, आटा, आरी, औड़ी, औटा, आका, आवता, हन, ई, हर, आटा, इका, वा, आ, आर, आरी, एला, आस, पा प्रत्यय के संयोग से तीन-तीन गो संज्ञा से संज्ञा बनाईं, जैसे-मामा-ममहर।

4. नीचे लिखल प्रत्यय जोड़ के विशेषण से विशेषण शब्द बनाईं। जैसे-प्रत्यय-वाँस से सतवाँस।

सर ..... आइल .....

वाँ ..... आउत .....

ठा ..... औठा .....

हन ..... उआ .....

हा ..... आ .....

ई ..... छहूँ .....

5. नीचे लिखल शब्दन से प्रत्यय अलग करीं-

करिअई ..... दोसराइत .....

बुढ़उती ..... चुनउटी .....

तिलउरी	.....	तेलहन	.....
बपहर	.....	सन्नाटा	.....
जजमनिका	.....	खुशियाली	.....
गउँवा	.....	अधेला	.....
पहिलवँठा	.....	मइलछहूँ	.....
सातवाँ	.....	गरमाइल	.....
खटहा	.....	साठा	.....
गँवारपन	.....	अधेला	.....
बहिनपा	.....	बचवा	.....
भतरा	.....	दुधार	.....
मुंशियाइन	.....	दुबाइन	.....
पड़ाइन	.....	चोरनी	.....

अध्याय 3

संज्ञा

संस्कृत व्याकरण में 'नाम' शब्द के प्रयोग पद के जवना भेद चाहे अर्थ खातिर कइल जाला ठीक ओही अर्थ में भोजपुरी, मैथिली, हिन्दी आदि आधुनिक भारतीय आर्यभाषा सब के व्याकरण में 'संज्ञा' शब्द प्रचलित बा, बल्कि कवनो पदार्थ के नामवाचक शब्द खातिर 'संज्ञा' शब्द रूढ़ हो गइल बा।

अँग्रेजी में 'संज्ञा' चाहे 'नाम' खातिर 'नाउन' चाहे 'नेम' शब्द के प्रयोग होला जवना के 'नेम ऑफ एनीथिंग' मतलब 'कवनों चीज के नाँव' कह के परिभाषित कइल जाला। दरअसल 'नाउन' चाहे 'नेम' अंगरेजी के एके धातु से बनल बा आ ई दूनो शब्द संस्कृत 'नाम' के ही बदलल रूप ह आ जवना नाम से कवनो वस्तु के सम्यक् ज्ञान-पहचान चाहे बोध होला ओकरे के ओह वस्तु के संज्ञा कहल जाला। सम् आ ज्ञा के मेल से बनल 'संज्ञा' के अर्थ होला ऊ शब्द जवना से कवनो वस्तु के सम्यक् ज्ञान होखे। एह से कवनो वस्तु के नाम खातिर 'संज्ञा' शब्द के प्रयोग तर्कसंगत आ भाषा वैज्ञानिक बा। एह तरह से कवनो वस्तु, व्यक्ति, स्थान, गुण धर्म आदि के बोधक शब्द के संज्ञा कहल जाला। संज्ञा एगो विकारी शब्द ह, जवना के रूप, लिंग आ वचन के अनुसार बदल जाला, जइसे-आदमी, नदी, पहाड़, सीता, सोन, हिमालय, मरजाद, गाज, टाल, बरिआत, पानी, आटा, घाव वगैरह।

संज्ञा के भेद-

संज्ञा के वर्गीकरण के लेके व्याकरण के विद्वान लोग एकमत नइखे। कामता प्रसाद 'गुरु' 'संज्ञा' शब्द से वस्तु आ धर्म के बोध भइला से संज्ञा के दूगो भेद-पदार्थवाचक आ भाववाचक मनले बाड़न। पदार्थवाचक से या त व्यक्ति के बोध होला चाहे जाति के। ऊ दूनो आधारन के मिला के संज्ञा के तीनगो भेद बतवले बाड़न-व्यक्तिवाचक, जातिवाचक आ भाववाचक।

भोजपुरी हिन्दी वगैरह आधुनिक भारतीय आर्य भाषा के व्याकरण जाने वाला लोग अंगरेजी के आधार पर संज्ञा का एह तीनों भेद के अलावे द्रव्यवाचक आ समूहवाचक दूगो आउर भेद मनले बाड़न। एह तरह से संज्ञा के पाँचगो भेद भइल-व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक, द्रव्यवाचक आ समूहवाचक। अइसे द्रव्यवाचक आ समूहवाचक संज्ञा-भेद जातिवाचक संज्ञा के उपभेद हवें सँ। नापे, मापे, जोखे आ समूह चाहे समुदाय के बोध करावे वाला पदार्थ सब जाति वाचक संज्ञा के तौलनीय आ समूह चाहे समुदायवाचक प्रकार हवे सँ। एकरा बावजूद एह द्रव्यवाचक आ समूहवाचक संज्ञा-भेद का स्वतंत्र अस्तित्व के मानल अनुचित ना कहाई काहे कि भोजपुरी हिन्दी के व्याकरण जाने वाला लोग एह दूनों संज्ञा के स्वतंत्र भेद मान चुकल बा।

व्यक्तिवाचक संज्ञा

जवना शब्द से कवनो एक व्यक्ति चाहे पदार्थ के बोध होखे, ओकरा के व्यक्तिवाचक संज्ञा कहल जाला, जइसे-रमेसर, दिनेसर, दीनानाथ, सरजुग, सुनीता, सोनपुर वगैरह। इहँवा 'रमेसर, दिनेसर, दीनानाथ' कहला से

एक एक व्यक्ति के, सरजुग कहला से एगो नदी के आ सोनपुर कहला से एगो जगह के बोध होला। आदमी, जानवर, देश, दिशा, नदी, परबत, गाँव, नगर, दिन, महीना, तीज, तेवहार, किताब वगैरह सब के निजी नाम व्यक्तिवाचक के उदाहरण हवे सँ।

व्यक्तिवाचक नाम प्रायः अर्थहीन होला, जरूरी नइखे कि ओह शब्द से व्यक्ति के धर्म, गुण सूचित होखे, व्यक्तिवाचक नाम व्यक्ति चाहे पदार्थ के पहचान चाहे सूचना खातिर संकेत-मात्र होला। कुछ व्यक्तिवाचक संज्ञा अर्थवाला होला जइसे-राम, रहीम, करीम वगैरह। बाकिर सार्थको नाम सब के अर्थबोध व्यक्ति में होत होख अइसन बाध्यता ना रहे जइसे-'दीनानाथ दुष्ट आदमी हवें' एह वाक्य में दीनानाथ एगो व्यक्ति के नाम बा जवन दुष्ट बा। इहाँ एह दीनानाथ शब्द के अर्थ 'दीन-गरीब पर दया देखावे' वाला मालिक चाहें स्वामी नइखें।

जातिवाचक संज्ञा

जवना शब्द से एक तरह के अनेक पदार्थन के बोध होखे, ओकरा के जातिवाचक संज्ञा कहल जाला जइसे-आदमी, मरद, मेहरारू, लरिका, लरकी, गाय, बएल, नदी, नहर वगैरह। जवना नाम वाला पदार्थ चाहे आकृति के एक बेरि जान-पहचान के हमनी ओह आकृतिवाला सब पदार्थन के नाम जान-पहचान जाईं, त ओकरे के जातिवाचक नाम चाहे संज्ञा कहल जाला। जेकरा एकबेरि आदमी, मरद, मेहरारू, लरिका, गाय,

बएल वगैरह के संकेत ग्रहण हो जाला ओकरा फेर आउर आदमी मरद, मेहरारू, लरिका, गाय, बएल वगैरह के देख के पहचाने में दिक्कत ना होखे।

समूहवाचक चाहे समुदायवाचक

जवना शब्द से पदार्थन का समूह चाहे समुदाय के बोध होखे, ओकरा के समूहवाचक चाहे समुदायवाचक संज्ञा कहल जाला, जइसे - बरिआत, मेला, गिरोह, झूँड, घउद, गाँज, टाल, बोझा, अँटिया वगैरह।

केतनो बर-बरिआत होखे चाहे मेला होखे, ओकरा में सैकड़न लोग होखे, बाकिर एकर प्रयोग एके वचन में होईं यदि कई गो बरिआत चाहे कईगो मेला के बात होई त बहुवचन में प्रयोग होई।

भाववाचक संज्ञा

जवना शब्द से कवनो वस्तु के गुण, चाहे क्रिया के बोध होला, ओकरा के भाववाचक संज्ञा कहल जाला जइसे-कमजोरी, सीनाजोरी, कामचोरी, गरीबी, अमीरी, लरिकाही, पंडिताई, सेखी, बदमासी, चाल्हाकी, सुनाई, गदहपन, दउड़ल, बइठल, कूदल, सूतल, खाइल, पीअल, जीअल वगैरह।

द्रव्यवाचक संज्ञा

जवना शब्द से नापे-मापे आ तउले वाला पदार्थन के बोध होखे, ओकरा के **'द्रव्यवाचक'** संज्ञा कहल जाला। जइसे-घीव, दूध, दही, लोहा, सोना, चानी, गिलट, आटा, दाल वगैरह। अइसे द्रव्यवाचक संज्ञा जातिवाचक संज्ञा के ही एगो उपभेद मानल जाले।

समूहवाचक संज्ञा

जवना संज्ञा से पदार्थ चाहे व्यक्ति के समूह के बोध होखे, ओकरा के समूहवाचक संज्ञा कहल जाला जइसे-दाल, गिराह, बरिआत, मेला, गाँज, झुँड वगैरह। समूहवाचक संज्ञा जातिवाचक संज्ञा के समूह चाहे समुदाय बोधक एगो प्रकार मानल जाला।

भोजपुरी में प्रत्ययन के मेल, वाक्य के प्रसंग आ प्रयोग भेद से संज्ञा के रूप बदल जाला जइसे-

भोजपुरी में जातिवाचक संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आ क्रिया के साथे प्रत्ययन के जोड़ के भाववाचक संज्ञा बनावल जाला जइसे-

1. जातिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा- पंडित-पंडिताई, राजपूत- राजपूतांव, भूमिहार-भूईहारी, गदहा से गदहई/गदहपन, मरद से मरदाही, पशु से पशुता, लरिका-लरिकाही/लरिकपन वगैरह।

2. सर्वनाम से भाववाचक संज्ञा- आप से अपनापन

3. विशेषण से भाववाचक संज्ञा- गरम-गरमी, नरम-नरमी, विधर्म-विधर्मी, कुकर्म-कुकर्मी, धूर्त-धूर्तई, बहादुर-बहादुरी, गरीब-गरीबी वगैरह।

4. क्रिया में प्रत्यय जोड़ के भाववाचक संज्ञा- सजाव-सजावट, बनाव-बनावट, दउड़ल-दउर, चढ़ल-चढ़ाई, लड़ल-लड़ाई, पढ़ल-पढ़ाई, कहल-सुनल-कहासुनी, बैठल-बइठक, डूबल-डूबकी, ठोकल-ठोकर, बुझल-बुझउवल वगैरह।

भोजपुरी में हिन्दिये जइसन कबो-कबो आ कहीं-कहीं जातिवाचक संज्ञा के प्रयोग व्यक्तिवाचक संज्ञा जइसन पावल जाला जइसे :- पुरी-जगन्नाथपुरी, देवी-दुर्गा, संवत्-विक्रम संवत्, महावीर-हनुमान वगैरह।

कबो-कबो व्यक्तिवाचक संज्ञा के प्रयोग ओही नाम के सब व्यक्तियन के गुण-धर्म के बोध करावे खातिर कइल जाला। अइसन हालत में व्यक्तिवाचक संज्ञा के प्रयोग जातिवाचक संज्ञा जइसन होखे लागेला। जइसे-खली आज के हनुमान हवें, आज समाज में कईगो रावन बाड़े, जीतन हमरा गाँव के नटवरलाल बा। एह वाक्य में हनुमान, रावन, नटवर लाल व्यक्तिवाचक संज्ञा होइयो के जातिवाचक संज्ञा के रूप में प्रयुक्त बा, काहे कि इंन्हन से हनुमान, रावन आ नटवरलाल के असाधारण गुण-धर्म के कारण एगो समूह के बोध होता, जवन जातिवाचक से जुड़ल बा।

बोध प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'संज्ञा' खातिर संस्कृत में कवन शब्द चलेला।

(क) सर्वनाम (ख) आख्यात

(ग) निपात (घ) नाम

2. 'रमेसर' कवना संज्ञा के उदाहरण ह।

(क) व्यक्तिवाचक (ख) जातिवाचक

(ग) समूहवाचक (घ) भाववाचक

3. 'लरिकउवा' संज्ञा के कवन रूप ह।

(क) गुरुतर (ख) गुरु

(ग) सामान्य (घ) विशिष्ट

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. संज्ञा के परिभाषा देत ओकरा भेदन के नाम लिखीं।
2. भोजपुरी संज्ञा के तीनों रूपन के बारे में बताईं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. संज्ञा के परिभाषित करत ओकरा भेदन के उदाहरण सहित परिचय दीं।

अध्याय 4

सर्वनाम

संज्ञा के बदले प्रयुक्त होखे वाला शब्द के सर्वनाम कहल जाला जइसे-हम, तू, ऊ, रउआ, केहू, कवन वगैरह।

हिन्दी व्याकरण में कामता प्रसाद गुरु सर्वनाम के परिभाषा देले बाड़न, सर्वनाम ओह विकारी शब्द के कहल जाला जवन पूर्वापर संबंध से कवनो संज्ञा के बदला में आवेला, जइसे-हम, तू, यह, वह वगैरह बाकिर पूर्वापर संबंध से सर्वनाम खाली संज्ञा के बदले ना आवे, बल्कि ऊ वाक्यन, उपवाक्यन आ वाक्यांशनो के बदले प्रयुक्त होला, जइसे- 'आदमी के ईमानदार होखे के चाहीं, ई उत्तम विचार बा।' बिआह गुड़िया के खेल ना, ई जनम-जनम के बन्धन होला।' एह दूनों उदाहरण में 'ई' सर्वनाम पहिला में वाक्य के आ दूसरा में वाक्यांश के बदले प्रयुक्त बा। एह तरह से ऊ सब विकारी चाहे अविकारी शब्द जवना के प्रयोग पूर्वापर प्रसंग के आधार पर संज्ञा, वाक्य, उपवाक्य चाहे वाक्यांश के प्रतिनिधि के रूप में कइल जाला, ओकरा के सर्वनाम कहे के चाहीं। बाकिर प्रायः हर व्याकरण में सर्वनाम ओही शब्द खातिर रूढ़ बा जवन केहू नाम (संज्ञा) के प्रतिनिधि होखे।

भोजपुरी सर्वनाम के भेद :

भोजपुरी में प्रयोग के आधार पर सर्वनाम के छव गो भेद होला-पुरुषवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, प्रश्नवाचक, संबंधवाचक आ निजवाचक।

(1) पुरुषवाचक

कहेवाला (वक्ता), सुनेवाला (श्रोता) आ जेकरा बारे में कहल जाव, ओह सब के व्याकरण में पुरुष कहल जाला। एह से जवना शब्दन से कहेवाला, सुने वाला भा जेकरा बारे में कहल जाय ओकर बोध होखे, ओकरा के पुरुषवाचक सर्वनाम कहल जाला। एह तरह से पुरुष वाचक सर्वनाम तीन तरह के होला-उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष आ अन्य पुरुष। कहेवाला उत्तम पुरुष, जइसे-हम, हमनी, हम सब, हमनी सब, सुनेवाला मध्यम पुरुष, जइसे-तें, तू, तू लोग, तहन लोग, तहनी का आ जेकरा विषय में कहल जाव ऊ अन्य पुरुष, जइसे-ऊ, ऊ लोग आदि। भोजपुरी में मध्यम पुरुष सर्वनाम तँ, तू, तँ लोग आदि के स्थान पर आदरसूचक शब्द रउआ, रउरा, रउआलोग, रउरालोग, रउरा सब, रउआ सब के प्रयोग कइल जाला। ओइसहीं अन्यपुरुष में आदर सूचक उहाँका, उहाँके, इहाँ का, इहाँ के, उहाँ सभन, इहाँ सभन के प्रयोग होला।

(2) निश्चयवाचक सर्वनाम

जवना सर्वनाम से वक्ता के नजदीक चाहे दूर के कवनो निश्चित वस्तु के बोध होखे, ओकरा के निश्चयवाचक सर्वनाम कहल जाला। नियरा (नजदीक) चाहे दूर के वस्तु के आधार पर एकर दूगो भेद कइल जाला। **निकटवर्ती निश्चयवाचक सर्वनाम**, जइसे-ई, ई लोग, इन्हन लोग, ई सभ इनकर, इन्हकर, इन्हकरा लोगन के, एह लोगन के, एकर आदि आ दूरवर्ती **निश्चयवाचक सर्वनाम**, जइसे-ऊ, ऊ लोग, ऊ सब, उलोग, उहाँ सभन, उन सब, उनका, उनके, उनकरा, उन्हका, ओकरा, ओकर, ओह लोगन के आदि।

(3) अनिश्चय वाचक सर्वनाम

जवना सर्वनाम से कवनो निश्चित वस्तु के बोध ना होखे, ओकरा के अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहल जाला, जइसे-केहू, कुछऊ, कुछ, कवनो, किछु आदि।

(4) प्रश्नवाचक सर्वनाम

जवना सर्वनाम से प्रश्न करे के बोध होला, ओकरा के प्रश्नवाचक सर्वनाम कहल जाला, जइसे-कवन, के, का, कथी, केकर, केकरा, किनकर वगैरह। के-के, कवन-कवन, कइसे-कइसे, केकर-केकर, कथी-कथी वगैरह द्विरूक्ति से बहुत्वबोधक प्रश्नवाचक सर्वनाम बनेला।

(5) संबंधवाचक सर्वनाम

जवना सर्वनाम से वाक्य में कवनो दूसर सर्वनाम से संबंध स्थापित कइल जाव, ओकरा के संबंधवाचक सर्वनाम कहल जाला, जइसे- जे, से।

(6) निजवाचक सर्वनाम

जवना सर्वनाम से निजता मतलब अपनापन के बोध होला, ओकरा के निजवाचक सर्वनाम कहल जाला। जइसे-अपने (स्वयं)

भोजपुरी के आदर सूचक शब्द ''रउआ'' के उच्चारण कहीं-कहीं ''रावा'' आ ''रउरा'' भी होला। डॉ॰ उदय नारायण तिवारी भोजपुरी के आदरसूचक सर्वनाम ''राउर'' के उत्पत्ति प्राकृत लाउल से भइल बा (''लाउल'' : प्रबोधचन्द्रोदय'' नाटक में प्रयुक्त भइल बा।) संस्कृत में एकर रूप राजकुल भा राजकुल्य होई। भोजपुरी में आदरसूचक सर्वनाम

राउर के अलावे आप, अपना आपन, अपने के प्रयोग होला, जइसे–हम आप से कहलीं, हम अपने से कहलीं, हम अपने के नेवता देहलीं आदि।

बोध प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'हम' कवन सर्वनाम ह ?

(क) उत्तम पुरुष (ख) मध्यम पुरुष

(ग) अन्य पुरुष (घ) महापुरुष

2. मध्यम पुरुष के कोटि में आवेलें

(क) कहेवाला (ख) सुनेवाला

(ग) रोवेवाला (घ) गावेवाला

3. 'जे, से' कवन सर्वनाम ह–

(क) सम्बन्धवाचक (ख) प्रश्न वाचक

(ग) पुरुष वाचक (घ) निश्चय वाचक

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. सर्वनाम के परिभाषा देत ओकरा भेदन के नाम लिखीं।
2. भोजपुरी के उत्तम पुरुष चाहे मध्यम पुरुष सर्वनाम के रूपावली लिखीं।

दीर्घ उत्तरीय

1. सर्वनाम के परिभाषा दीं आ ओकरा भेदन के उदाहरण सहित परिचय दीं।

अध्याय 5

वाक्य विचार

शब्दन का क्रमबद्ध सार्थक समूह के वाक्य कहल जाला। जइसे- सुनयना पोथी बाँच तारी। लइका पानी पीअता। गाड़ी नाला में गिर गइल वगैरह।

वाक्य के अंग-उद्देश्य आ विधेय

मुख्य रूप से वाक्य के दूगो अंग होला-उद्देश्य आ विधेय।

उद्देश्य आ विधेय- वाक्य में जेकरा बारे में कुछ कहल जाव, ऊ उद्देश्य ह आ उद्देश्य का बारे में जे कुछ कहल जाव, ऊ विधेय ह। जइसे-कविता खातारी। किसन पढ़ता।

एह वाक्य में कविता आ किसन उद्देश्य बा आ 'खा तारी' आ 'पढ़ता' विधेय बा।

उद्देश्य एगो संज्ञा भा सर्वनाम हो सकेला चाहे ओकरा से संबंधित त समानाधिकरण विशेषण भी ओकरा साथे हो सकेला। ई समानाधिकरण उद्देश्य के विस्तार कहाला। जइसे- 'हमार बड़का चाचा राजनारायण सिंह आइल बाड़न'। मोहन के भाई श्याम वर्मा पुलिस में रहस। एह वाक्य में 'हमार बड़का चाचा' 'राजनारायण सिंह' आ 'मोहन के भाई' उद्देश्य बा 'श्याम वर्मा' के विस्तार भा समानाधिकरण बा।

विधेय में कम-से-कम एगो क्रिया-पद रहल जरूरी होला। ऊहे मुख्य विधेय होला, बाकिर विधेय का विस्तार का रूप में कर्म, क्रियाविशेषण आ आउर दोसरो संबंधित पद आ सकेला। जइसे-सुरेन्द्र बाबू अपना बाप-मातारी आ भाई-बहिन के पटना बोला लेलन। राजकुमार पाल आपन लइका के पढ़ावत बाड़न।

इहाँ मुख्य विधेय 'बोला लेलन' आ 'पढ़ावत बाड़न' के विसतार 'अपना बाप-मतारी आ भाई-बहिन' आ 'आपन लइका' बा।

अइसनो वाक्य होला जेमें उद्देश्य आ विधेय में से एगो लुप्त रहेला। जइसे-'आईं' एमें उद्देश्य 'हम' भा 'अपने' लुप्त बा। ओइसहीं-'एमें विधेय अनुक्त भा लुप्त बा, जवना के पूर्ति प्रसंगानुसार कवनो क्रिया पद से दीहल जा सकेला।

वाक्य के प्रकार

अर्थ आ रचना के अनुसार वाक्य के कई गो प्रकार होला।

अर्थ के अनुसार वाक्य के प्रकार

अर्थ के अनुसार वाक्य के आठ गो प्रकार होला-

(1) विधानार्थक वाक्य, (2) निषेधार्थक वाक्य, (3) आज्ञार्थक वाक्य, (4) विस्मयार्थक वाक्य (7) संकेतार्थक वाक्य आ (8) संदेहार्थक वाक्य।

(1) विधानार्थक वाक्य-जवना वाक्य से कवनों क्रिया के होखे

के बोध होला ओकरा के विधानार्थक वाक्य कहल जाला। जइसे-सुप्रज्ञा पढ़तारी। घोड़ा घास खाता। बस खुलता।

(2) **निषेधार्थक वाक्य**-जवना वाक्य से कवनो क्रिया के ना होखे के बोध होला ओकरा के निषेधार्थक वाक्य कहल जाला। जइसे-संजय खेलत नइखन। हमरा कलम नइखे। अशोक स्कूल ना जइहन। निवेदिता राज ना खइहन।

(3) **आज्ञार्थक वाक्य**-जवना वाक्य से कवनो क्रिया के करे भा ना करे का आदेश के बोध होला ओकरा के आज्ञार्थक वाक्य कहल जाला। जइसे-गाँव जा। घमा में मत दउड़। मन लगा के पढ़।

(4) **प्रश्नार्थक वाक्य**-जवना वाक्य से प्रश्न के बोध होला ओकरा के प्रश्नार्थक वाक्य कहल जाला। जइसे-कहाँ जातार? ई का ह? तोहर नाँव का ह? तोहर घर कहाँ बा? कहवाँ जातार?

(5) **इच्छार्थक वाक्य**-जवना वाक्य से इच्छा, कामना, सराप आदि के बोध होला ओकरा के इच्छार्थक वाक्य कहल जाला। जइसे-भगवान करस, तोहार बढ़न्ती होखे। तू अच्छा हो जा। जीअऽ, जागऽ, नीके रह।

6. **विस्मयार्थक वाक्य**-जवना वाक्य से विस्मय, अचरज आदि के बोध होखे ओकरा के विस्मयार्थक वाक्य कहल जाला। जइसे-अइसन जुलुम! हाय राम! ओह! ई का भइला! बड़ा दुःख बा! ऐं! अइसन? बारे-रे-बाप!

(7) **संकेतार्थक वाक्य**-जवन वाक्य दू भा दू से अधिका वाक्य

के मेल से बनेला ओकरा के संकेतार्थक वाक्य कहल जाला। एमें एक वाक्य का क्रिया का सम्पन्न होखे के सम्भावना दोसरा वाक्य पर निर्भर करेला। जइसे-अगर अभिषेक राज आ जइतन, त लिखे के काम पूरा हो जाइत। रउआ कहीं, त हम पटना जाईं।

(8) संदेहार्थक वाक्य-जवना वाक्य से क्रिया का होले में संदेह के बोध होला ओकरा के संदेहार्थक वाक्य कहल जाला। जइसे-मास्टर साहेब आवत ना होखस। इस्कूल साइद विहान से खुली। लइका खेलत ना होखस।

रचना के अनुसार वाक्य के प्रकार

रचना के अनुसार वाक्य **तीन** प्रकार के होला-**(1) सरल वाक्य (2) मिश्र वाक्य आ (3) संयुक्त वाक्य।**

(1) सरल वाक्य-जवना वाक्य में एगो उद्देश्य आ एगो विधेय होला ओकरा के सरल वाक्य कहल जाला। जइसे-लरिका पढ़ता। मोहन घरे जइहन। हम पढ़तानी। नितेश खातारन।

(2) मिश्र वाक्य-जवना वाक्य में एगो सरल वाक्य का अलावे ओकरा उद्देश्य चाहे विधेय पर आश्रित एगो या एगो से ज्यादा उपवाक्य होला ओकरा के मिश्र वाक्य कहल जाला। मिश्र वाक्य के उपवाक्य मुख्य उपवाक्य का साथ व्याधिकरण समुच्चय से जुड़ल रहेला।

उपवाक्य

उपवाक्य तीन तरह के होला- संज्ञा उपवाक्य, विशेषण उपवाक्य,

आ क्रियाविशेषज्ञण उपवाक्य। विन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव अपना किताब ''भोजपुरी व्याकरण के रूपरेखा' में उपवाक्य के प्रकार का बारे में आपन विचार एह तरह से दीहले बाड़न-

संज्ञा उपवाक्य-ई वाक्य में संज्ञा के काम करेला आ मुख्य उपवाक्य से 'कि, जे' संयोजक से जुड़ल रहेला जइसे-

कर्त्ता का रूप में -'बान्ह कइसे टूट गइल' आश्चर्य बा।

कर्म का रूप में-हमरा मालूम रहे कि 'तू ना अइब'।

समानाधिकरण का रूप में-'ई बात कि रमेश गारी देलन' गलत बा।

पहिला वाक्य में 'बा' क्रिया के कर्त्ता 'बान्ह कइसे टूट गइल', दूसरा वाक्य में 'मालूम रहे क्रिया के कर्म तू ना अइब आ तीसरा वाक्य में 'ई बात' संज्ञा के समानधिकरण 'रमेश गारी देलन' संज्ञा उपवाक्य बा।

विशेषण उपवाक्य-ई वाक्य में विशेषण के काम करेला। ई 'जे' आ 'जवन' संयोजक से जुड़ल रहेला। मुख्य उपवाक्य का साथे एकर सहचर संयोजक से, तवन, हओ के, ओकरा, तवना के आदि से भी जुड़ सकेला। विशेषण उपवाक्य वाक्य में मुख्य उपवाक्य का पहिलहूँ आ सकेला आ बादो में। ई मुख्य उपवाक्य का कर्त्ता भा कर्म के विशेषता देखावेला आ समानधिकरणों बन के आवेला। जइसे- कर्त्ता से - ऊ पौधा, जवन हम रोपले रहीं, सूख गइल।

कर्म से- ऊ एगो बात कहलन जवन सबका बेजाँय लागल।

समानाधिकरण से-रउरा जे चिट्ठी भेजनी, ओ से बड़ा सहारा मिलल।

कहीं-कहीं विशेषण उपवाक्य के संयोजक लुप्तो रहेला। जइसे-जइसन अपने के मर्जी होए (ओइसने हमनीं भा कोई करी) क्रियाविशेषणों का शब्द में कहीं-कहीं विशेषण उपवाक्य छिपल रहेला। जइसे-ई ऊ दिआर (क्षेत्र) ह, जहवाँ कउआ भात ना पूछे। (जहवाँ-जवना क्षेत्र में)।

क्रियाविशेषण उपवाक्य- ई वाक्य में क्रियाविशेषण जइसन काम करेला इहो उपवाक्य मुख्य उपवाक्य का पहिले भा पाछे आ सकेला। ई वाक्य में नीचे लिखल तरह से आवेला। एमें आश्रित उपवाक्य का पहिले 'जब, जइसे, अतना, काहेकि, अगर, जो, जहाँ, जहाँ से, जहाँ ले, जहाँ तक, अरगचे आ मुख्य उपवाक्य का साथ 'तब, ओइसे, ओतना, तौभी, ताहम, उहाँ, उठाँ तक वैरह संयोजक आ सहचर-संयोजक आवेला।

कालवाचक-अब हल्ला भइल, तब लोग दउड़ल।

जब ले ऊ आवस ना, तूँ एतहीं बइठल रहिहऽ।

स्थानवाचक-जहाँ काम मिले, उहाँ जाए के पड़ी।

जेने से आइल, ओने लौट गइल।

रीतिवाचक-जइसे फरिआय, ओइसे बात करिहऽ।

हम ओह लेखा ना बोलब, जे लेखा तूँ बोलेलऽ।

परिणामवाचक-जेतने अपरेशन के दिन नजदिकाता, ओतने ओकर करेज काँपता। जेतना चल सके, उठा ले जा।

कार्यकारणवाचक-हम उनका के ना भुला सकीं, काहेकि उनके चलते हमरा ई दिन देखे के पड़ल। अइसन एसे कह देनी, ताकि उनका मन में शंका ना रह जाय।

विरोधसूचक-ऊ गरीब बा, तबो हमार मदत करी। ऊ भले ही ना बर बा, बाकिर जबान के पक्का बा।

संकेतवाचक-ऊ खूब मेहनत करेलन, ताकि नीरोग रहस।

ब्याधिकरण समुच्चय के प्राय: सब संयोजक का साथ क्रियाविशेषण उपवाक्य के उदाहरण बन सकेला। कहीं कहीं मुख्य उपवाक्य भा आश्रित उपवाक्य में कुछ पद लुप्तो रहेला, जइसे-जहाँ मन करे जा। बइठ चाहे जा। या त तूहीं, ना त हमही इहाँ बइठब।

(3) संयुक्त वाक्य-जवना वाक्य में एक से जादे सरल भा मिश्र वाक्य आश्रित उपवाक्य का साथे चाहे अकेले समानाधिकरण समुच्चय से जुड़ल होला, ऊ संयुक्त वाक्य कहाला। संयुक्त वाक्य चार तरह से समानाधिकरण समुच्चय से जुड़ेला-(क) संयोजक (ख) विभाजक (ग) विरोधदर्शक (घ) परिणाम-सूचक

(क) संयोजक-एह काम से पइसा त मिलबे करी, समाज के सेवो होई। राम खाली इंजीनियरे नइखन, बलुक महाभारत के जानकारो बाड़न।

(ख) विभाजक-आज खेल में या त जय चाहे छय होई। या त पढ़े बइठऽ, ना त खेले जा।

(ग) विरोध-दर्शक-हम मोहन के लाख समझवनी, बाकिर ऊ हमार एक ना मनलें। लोग के मदत करीं, बाकिर तरफदारी मत करीं।

(घ) परिणाम-सूचक-अगर रउरा कहीं त, हमहूँ साथे चलीं। राम हमार बात ना मनलन, एह से उनका ई दिन देखे के पड़ल।

वाक्य के रूपान्तर

एक तरह का वाक्य के बिना अर्थ बदलले, दोसर तरह का वाक्य में बदल देवे के प्रक्रिया के रूपान्तर कहल जाला।

सरल वाक्य से मिश्र वाक्य

सरल वाक्य-शर्मा जी अपना हिस्सा के खेत बेच दीहलन।

मिश्र वाक्य-शर्मा जी ऊ खेत बेच दीहले, जवन उनका हिस्सा के रहे।

सरल वाक्य से संयुक्त वाक्य

सरल वाक्य-बेमार भइला का चलते ऊ बारात मे ना अइलन।

संयुक्त वाक्य-ऊ बेमार रहस, एह से बारात में ना अइलन।

मिश्र वाक्य से सरल वाक्य

मिश्र वाक्य-जे ईमानदार होला, ओकर सभ इज्जत करेला।

सरल वाक्य-ईमादार के सभे इज्जत करेला।

संयुक्त वाक्य से सरल वाक्य

संयुक्त वाक्य- धनो गइल आ धरमो गइल।

सरल वाक्य-धन, धरम दूनू गइल।

कर्त्तृवाच्य से कर्म वाच्य

कर्त्तृवाच्य- हम पढ़तानी।

कर्मवाच्य- हमरा से पढ़ाता।

विधिवाचक से निषेधवाचक

विधिवाचक- हम दिल्ली जरूर जाएब।

प्रश्नवाचक- हम दिल्ली काहे ना जाएब?

प्रश्नवाचक से विधिवाचक

प्रश्नवाचक- रउरा अइसन हिम्मती आदमी कहाँ मिली?

विधिवाचक- रउरा अइसन हिम्मती आदमी कतहीं ना मिली।

बोध प्रश्न

1. वाक्य के परिभाषा देत ओकर प्रकार के बारे में बताई।

2. वाक्य के अंग सब के परिभाषा बताईं।

3. रचना के अनुसार वाक्य के कय गो प्रकार बतावल गइल बा।

अध्याय 6

विशेषण

संज्ञा आ क्रिया के विशेषता बतावेवाला शब्द के विशेषण कहल जाला। जइसे-करिआ गाय, पीअर आम, गोर लइकी, तेज दउड़ल, गवें-गवें बोलल, लाहे-लाहे डोलल वगैरह। एमें करिआ, पीअर, गोर, तेज, गवें-गवें आ लाहे-लाहे विशेषण शब्द बाड़े स।

विशेषण के कामे ह विशेषता बतावल। भाषा के छोट इकाई वाक्य ह आ ओकर मुख्य रूप से दूगो भाग होला– उद्देश्य आ विधेय। जवन शब्द उद्देश्य आ विधेय के विशेषता बतावे, उहे ओकर विशेषण होला। व्याकरण में उद्देश्य के विशेषता बतावेवाला के संज्ञा-विशेषण आ विधेय के विशेषता बतावे वाला के क्रिया विशेषण कहल जाला।

विशेषण के भेद

संज्ञा आ क्रिया के विशेषता बतावे के आधार पर विशेषण के दूगो भेद बतावल गइल बा–संज्ञा विशेषण आ क्रिया विशेषण।

संज्ञा विशेषण - जवना शब्द से संज्ञा के विशेषता के ज्ञान होय, ओकरा के संज्ञा विशेषण कहल जाला, जइसे-कत्थी कुरता, कनफुँकवा गुरु, डम्हक आम, कमाऊ पूत, करकसा मेहर, कुअतल लइका, खकही

चटाई, खटतुरूस अंगूर, गवेल लइका, गरदाखोर कपड़ा वगैरह में कत्थी रंग कुर्त्ता के, कनफूँकवा गुरु के, डम्हक आम के, कमाऊ पूत के, करकसा मेहर के कुअतल लइका के, खकही चटाई के, खटतुरूस अंगूर के, गवेल लइका के, गरदाखोर कपड़ा के संज्ञा के विशेषता बतावता। एह से ई सब के सब संज्ञा विशेषण के उदाहरण बा।

क्रिया विशेषण–जवना शब्द से क्रिया के विशेषता उजागर होला, ओकरा के क्रिया-विशेषण कहल जाला, जइसे-गवें-गवें बोलल, गते-गते चलल, गद्‌गद् भइल, गपागप भकोसल, गाहे-बेगाहे टोकल, अनचिते आ धमकल, अचके गिरल, अछोधाह होके रोवल वगैरह, गवे-गवे बोलल क्रिया के, गते-गते चले के, गद्‌गद् भइला के, गपा-गप भकोसला के, गाहे-बेगाहे टोकला के, अनचिते आ धमकला के, अचके गिरला के, अछोधाह होके रोवला के, क्रिया के विशेषता बतावेवाला शब्द बा। एह से ई सब क्रिया विशेषण के उदाहरण बा। व्याकरण में विशेषण शब्द के द्वारा जवना शब्द (संज्ञा चाहे क्रिया) के विशेषता बतावल जाला ओकरा के विशेष्य कहल जाला, जइसे-एहर आवऽ में एहर विशेषण के विशेष्य 'आवल' क्रिया बा ओइसहीं, करिआ काग में काग, लमहर गाँज में गाँज, पातर कर्ची में कर्ची, कुअतल पड़रू में पड़रू क्रम से करिआ, लमहर, पातर, कुअतल विशेषण के विशेष्य शब्द बा। भाषा में कुछ शब्द विशेषणो के विशेषता बतावे वाला होले, उन्हन के प्रविशेषण चाहे विशेष्य विशेषण कहल जाला, जइसे-कुच-कुच अँहरिया रात, खूब पाकल आम, ढ़ेर पातर लइकी, बहुते लबरा आदमी में कुच-कुच, खूब, ढेर, बहुते शब्द क्रम से

अँहरिया, पाकल, पातर, लबरा विशेषण के विशेषता बतावेवाला शब्द बा जवन प्रविशेषण चाहे विशेष्य विशेषण के उदाहरण बा।

संज्ञा विशेषण के भेद-

प्रयोग के आधार पर संज्ञा विशेषण के पाँचगो भेद होला-सार्वनामिक विशेषण, गुणवाचक विशेषण, संबंधवाचक विशेषण, संख्यावाचक विशेषण आ परिमाण वाचक विशेषण।

1. सार्वनामिक विशेषण

जवन सर्वनाम विशेषण जइसन विशेष्य के विशेषता बतावेला, ओकरा के सार्वनामिक विशेषण कहल जाला, जइसे-ई आम, ऊ काम, अपन घर, तोहर कटोरा, अइसन कठरा, ओइसन करछुल, कइसन दुल्हा वगैरह में ई, ऊ, अपन, तोहर, अइसन, ओइसन, कइसन सर्वनाम क्रम से आम, काम, घर, कटोरा, कठरा, करछुल, दुल्हा विशेष्य (संज्ञा) के विशेषता बता रहल बा।

पुरुषवाचक आ निज वाचक सर्वनाम के छोड़ के बाकी सब सर्वनाम के प्रयोग विशेषण जइसन होला। संज्ञा/विशेष्य के साथे आवेवाला सर्वनाम के ओह संज्ञा/विशेष्य के विशेषण कहल जाला।

जब यौगिक सार्वनामिक विशेषण विशेष्य के बिना आवेलें त ओकर प्रयोग संज्ञा जइसन होला, जइसे-जइसन करबऽ ओइसन पइबऽ। सार्वनामिक विशेषण के प्रयोग मूल आ यौगिक दू रूपन में होला। एह आधार पर सार्वनामिक विशेषण के दूगो भेद पावल जाला-मूल सार्वनामिक विशेषण आ यौगिक सार्वनामिक विशेषण।

2. गुणवाचक विशेषण

जवन शब्द विशेष्य के गुण धर्म के उजागर करेला ओकरा के गुणवाचक विशेषण कहल जाला, जइसे-अच्छा, बुरा, पातर, मोट, लामा, चाकर, लाल, हरिअर वगैरह।

भोजपुरी में गुणवाचक विशेषण के संख्या आउर विशेषण सब से अधिका बा जवन के काल, स्थान, आकार, रंग, दशा स्वभाव वगैरह के आधार पर कइ कोटि में बाँटल जा सकेला, जइसे

काल सूचक गुणवाचक विशेषण- नया/नाया, पुरान, ताजा/टटका, बसिआ, भूत, पिछिला/पछिला, अगिला, टिकाउ, वर्तमान, भविष्य, वगैरह।

स्थान सूचक गुणवाचक विशेषण-उजार, ऊँच-नीच/ऊँचा-खाला, भारतीय, बिहारी, चउरस, दहिना/दहिनवारी, बावाँ, बवाँरी, बाहरी, भीतरी, ऊपरी, सतही, पूरबी, देसीय, देसिला, गहिर, छितनार वगैरह।

आकार सूचक गुणवाचक विशेषण-गोल, लामा, चाकर, चवकोर सुनर, नुकीला/ नोकदार, सुडउल, समान, तिरछा, सीधा, गलफूल्ला।

रंग सूचक गुणवाचक विशेषण-लाल, पीअर, हरिअर, कत्थी, उज्जर, करिआ, फीका, करलूठ, गरदाखोर वगैरह।

दशा सूचक गुणवाचक विशेषण-नीमन, सुखल, हरिअर, काँच, पाकल, खुश, दुबर पातर, भारी, गाढ़, भींजल, धनिक, गरीब, अमीर, मेहनती, रोगी, बेमरिहा, मोट, छोट, पघिलल, गील सूखल, पोसुआ, खीसिआइल, घबराइल, अपाहिज, कटिहर, कठेस, कन्हा।

3. सम्बन्ध वाचक विशेषण

जवन शब्द विशेष्य के विशेषता आउर वस्तु के संबंध से बतावेला, ओकरा के संबंधवाचक विशेषण कहल जाला। सम्बन्धवाचक विशेषण संज्ञा, क्रिया आ क्रिया-विशेषण सब से बनल होला, जइसे- भीतर से भीतरी, बाहर से बाहरी, भारत से भारतीय, हप्ता से हप्तवारी, माह से माहवारी, पहाड़ से पहाड़ी, साल से सालाना वगैरह।

4. संख्यावाचक विशेषण

जवना शब्द से विशेष्य के संख्यागत विशेषता उजागर होखे, ओकरा के संख्यावाचक विशेषण कहल जाला। निश्चित आ अनिश्चित संख्या के आधार पर एकर दूगो भेद होला-निश्चित संख्यावाचक विशेषण आ अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण।

5. परिमाण वाचक विशेषण

जवना शब्द से कवनो वस्तु के माप-तौल से जुड़ल विशेषता उजागर होला ओकरा के परिमाण वाचक विशेषण कहल जाला, जइसे-सेरभर दूध, धोरा पानी, तोला भर सोना के सेरभर, थोरा, तोलाभर पद क्रम से दूध, पानी आ सोना के परिमाण वाचक विशेषण बा। एकरा अलावे एतना, ओतना, जेतना, केतना, आउर, सभ, समुच्चा, थोरका, जादा, अधिका वगैरह एकर उदाहरण बा।

भोजपुरी के कुछ आपन विशेषण

नीमन (बढ़िया), लोफर चाहे लखैरा (आवारा), पुरनिया (बूढ़), फोकराइन (दूध के गंध), छिपछिपाह (हल्का-हल्का पानी), टटका (ताजा), पेन्हायल (दूध देवे खातिर तइयार जानवर) निखुराह चाहे निखोराह (खाय में मीन-मेख निकालेवाला), छरिआह (ढेर रोअनिया), जड़ाऊँ (जड़ल), उदन्त (बिना दाँत के बएल), टंच (बहुते बढ़िया), छिनार (रसिक मिजाजी), बमकल (क्रोधित), पेटू (अधिका खायवाला), फरदहर (तेज), उवेगल (उद्विग्न), ललुआवन (लललइतअस), छोहगर चाहे ओछ (छोट), लहालोट (गदगद), सवदगर (स्वादिष्ट), जनमउती चाहे जनमतुआ (नवजात), बदरकट्टू (बदरी के बादो कड़-कड़ धूप), बतफरोस चाहे बतपंगना (बतबनवना), ललपटिया (धूर्त), एकपिठिया (ठीक बाद में जनमल लड़का), पहिलौंठ (पहिला लइका), पेटमधवा (जवन खाली पेट भरे के बाड़े में सोचत होखे) पेटपोछुआ (अंतिम संतान), नन्हमुनिआ (छोट मुँह के घाव), बलतोड़, (बाल टूटला से भइल घाव), बाघी कोखी (काँख के घाव), पिलखी (पीठ के घाव), कनकट (जवना बरतन के किनारी टूट गइल होखे), लरछूत चाहे पराछूत चाहे छूतंहर (ज़वन आसानी से पीछा ना छोड़े), थेथर (बेहाया), गुमसाइन (एगो खास तरह के गन्ध), बिलाला (ललाइत), रकटल चाहे खखनल (ललाइत), खरकटल (बरतन में अन्न सूख के पकड़ लिहल), बेहाल (व्यग्र), बेलाग (बिना लाग के), बरिआर (मजबूत), नीरइठ (जवन जूठ नइखें), मरखाह (मारेवाला मवेशी), सुधुआ चाहे सुधा (ना मारेवाला मवेशी), बउध (भोदा, बिना कंठ के), बकलर (मूरख) एकसंझी (दिन

में एक बार दूध देवेवाली मवेशी), उलाड़ (असंतुलित गाड़ी), अथाह (जेकरा सीमा के पता ना चले), थाह (जेकरा सीमा के पता होखें), दूधकट्टू (जवना लइका के लइकाई में माई के दूध पीये ला ना मिलल होखे) आदि।

बोध प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'अइसन दुल्हा' में 'अइसन' शब्द उदाहरण बा-

   (क) परिमाण वाचक विशेषण के (ख) संबंधवाचक विशेषण के

   (ग) सार्वनामिक विशेषण के (घ) गुणवाचक विशेषण के

2. 'तिगुना' शब्द कवना विशेषण के उदाहरण बा।

   (क) क्रम बोधक (ख) आवृति बोधक

   (ग) समुदाय बोधक (घ) अनिश्चय वाचक

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. विशेषण के परिभाषा बताईं।
2. विशेषण के भेदन के परिचय दीं।
3. भोजपुरी के संख्यावाचक विशेषण के बारे में बताईं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. विशेषण के परिभाषा देत ओकरा भेदन के उदाहरण सहित परिचय दीं।

अध्याय 7

कारक

कारक के अर्थ होला-करेवाला। व्याकरण में 'कृ' धातु से बनल, 'कारक' शब्द के लक्षण बतावल बा कि क्रिया के संगे सम्बन्ध (अन्वय) के योग्यता कारकत्व ह आ जवना में कारकत्व होखे, उहे कारक ह- **'क्रियान्वयित्वम् इति कारकत्वम्।'** बाकी नागेश भट्ट खाली क्रिया के निष्पादक के कारक मनले बाड़न- **'क्रिया निष्पादकत्वं कारकत्वम्।'** मतलब क्रिया के निष्पन्न करे के योग्यता जेकरा में होखे चाहे जे क्रिया के निष्पत्ति में सहायक होखे, ऊ कारक ह।

क्रिया के साथ अन्वय के आधार पर कारक के चार गो भेद होला-कर्त्ता, कर्म, करण आ अधिकरण, कई वैयाकरण सम्प्रदान, अपादान आ संबंध के क्रिया के साथ सीधा सम्बन्ध चाहे क्रिया के निष्पादन में सीधा सहायक ना होखे के वजह से कारक नइखे मनले। बाकी आचार्य रामदेव त्रिपाठी आ विन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव क्रिया के साथे प्रत्यक्ष आ परोक्ष संबंध के आधार पर सम्बन्ध कारक के छोड़ के कारक के छव गो भेद मनले बाड़न-कर्त्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान आ अधिकरण। उहँवे डॉ॰ उदयनारायण तिवारी सम्बन्ध के भी कारक भेद में स्थान देले बाड़न। क्रिया के साथ अप्रत्यक्ष संबंध के आधार पर यदि सम्प्रदान आ अपादान के कारक भेद मानल जा सकत बा त सम्बन्ध के कारकभेद ना मानल उचित ना कहा

सके। एह तरह से क्रिया के साथ प्रत्यक्ष आ परोक्ष संबंध के आधार पर कारक के सात भेद मानल जा सकेला आ ओकरा के दू कोटि में रखल जा सकेला–

(1) क्रिया के प्रत्यक्ष सम्बन्धी कारक–कर्त्ता, कर्म, करण आ अधिकरण।

(2) क्रिया के अप्रत्यक्ष सम्बन्धी कारक–सम्प्रदान, अपादान आ सम्बन्ध।

कर्त्ता कारक

वाक्य में जे क्रिया करेला चाहे क्रिया करे खातिर स्वतंत्र होला, ओकरा के कर्त्ताकारक कहल जाला। ई कर्त्ताकारक तीन तरह के होला– प्रधान, प्रयोजक आ प्रयोज्य।

प्रधान कर्त्ता–जे खुद क्रिया करेला, जइसे–राम हाँफतारे।

प्रयोजक कर्त्ता– जे दोसरा से क्रिया (काम) करवावेला, जइसे–नितेश रवि से पाती पढ़ववलन। इहाँ नितेश प्रयोजक कर्त्ता बाड़न।

प्रयोज्य कर्त्ता– जे दोसरा के प्रेरणा से क्रिया करे। ऊपर के वाक्य में 'रवि' प्रयोज्य कर्त्ता बाड़े, काहे कि प्रयोजक नितेश से प्रेरित होके पढ़े के काम करत बाड़े।

भोजपुरी के कर्त्ता के साथे कवनो कारकीय चिह्न ना लागे। बाकी विशेष परिस्थिति में कर्त्ता के साथे 'के' आउर 'से' परसर्ग लागेला, जइसे– कृदन्त क्रिया आ विधि क्रिया से जहाँ चाहिए के अभिप्राय प्रकट होय– मोहन के खाये के चाहीं। सीता के नहाये के चाहीं। राम के घरे जाये के बा।

कर्त्ता द्वारा क्रिया करे में असमर्थता प्रकट करे खातिर चाहे अनायास क्रिया सम्पन्न हो जाये के स्थिति में कर्त्ता खातिर 'से' परसर्ग लागेला, जइसे-करुणा से गावल नइखे जात, किसन से बजावल नइखे जात, गणेसी से गिलास फूट गइल, तहरा से नइखे रहल जात, उनका से नइखे सहल जात वगैरह।

कर्मकारक

वाक्य के जवना पद पर क्रिया (व्यापार) के फल पड़ेला, ऊ कर्म कारक कहल जाला।

करण कारक

क्रिया के सिद्धि में जे सबसे बढ़के साधक होखे चाहे क्रिया (व्यापार) करे में कर्त्ता जेकर सबसे अधिक सहायता लेवे, ऊ करण कारक होला। भोजपुरी के करण कारक में 'से' परसर्ग के प्रयोग होला, जइसे-ऊ तलवार से लड़ी, हरिआ लाठी से मारी, सुप्रज्ञा पाल कंडा का कलम से लिखतारी। एह वाक्य सब में तलवार, लाठी, कंडा के कलम करण कारक के उदाहरण बा।

करण कारक के संज्ञा रूप में ए, एं, अन्, अन्हि वगैरह विभक्ति लगा के त कबो 'के' परसर्ग लगा के 'से' परसर्ग के अर्थ प्रकट कइल जाला, भुखे पेट बथऽता (भुख से पेट बथऽता), दाँतन्हि लइका चीर दिहलस (दाँतन से लइका चीर दिहलस), कवना राहे जइबऽ (कवना राह से जइबऽ), चेथरूआ आसकते ना गइल (चेथरूआ असकत में ना गईल), ई

बस्तर देहे लगा लऽ (ई बस्तर देह से लगालऽ), हाथ के लिखल किताब (हाथ से लिखल किताब), बाप के अरजल धन (बाप से अरजल धन), ढेंकी के कूटल चाउर (ढेंकी से कूटल चाउर) वगैरह।

सम्प्रदान कारक

वाक्य में जेकरा खातिर क्रिया (व्यापार) कइल जाय, ओकरा के सम्प्रदान कारक कहल जाला। जेकरा के कुछ दिहल जाय चाहे जेकरा खातिर कुछ कइल जाय, उहे सम्प्रदान कारक कहल जाला।

भोजपुरी में सम्प्रदान कारक खातिर ला, लागे, लेखें, बदे, खातिर, वास्ते, नेवरतीं, निमित वगैरह यौगिक परसर्गन के प्रयोग कइल जाला, जइसे-राम ला/लागि/बदे/खातिर/वास्ते/नेवरती दवा ले आवऽ, कुक्कुर खातिर कवरा ले आवऽ, मोर लेखे नी बालम जी के नइहरवा वगैरह।

भोजपुरी लोकगीतन में सम्प्रदान खातिर लेखे, जोगे, लागि, के परसर्ग के खूब प्रयोग पावल जाला। जइसे-हमरा सामी जोगे जेवना बनावहू हे सइंया लागी सेजिया डंसइबो, हमरा के गहना गर्‌हा द, बबुआ के आमी घुमा दऽ वगैरह।

अपादान कारक

वाक्य में क्रिया द्वारा जहाँ से भा जवना से कवनो चीज अलग होय, ओकरा के अपादान कारक कहल जाला। ई बात स्पष्ट बा कि स्थिरता ओकरे में होई जवना से कवनो चीज अलग होत होखे आ उहे विश्लेष के आश्रय होई एह से ओकरे के अपादान कहल जाला।

कहीं-कहीं आ कबो-कबो अपादान खातिर के, से परसर्ग के प्रयोग होला जइसे- जेल के भागल कैदी, पेड़ से पतई गिरल वगैरह।

सम्बन्ध कारक

संज्ञा के जवना रूप से वाक्य के वस्तु के सम्बन्ध दोसरा वस्तु के संगे सूचित होय, ओह रूप के संबंधकारक कहल जाला, जइसे-गरीब के कुटिया, देवेन्द्र के आजी (दादी), शुभेन्द्र के बाबा, सर्वेन्द्र के भाई, निवेदिता के माई वगैरह।

वाक्य में क्रिया के साथे सीधा सम्बन्ध ना होखे के कारण सम्बन्ध के कारक भेद ना मानल जाव। कुछ वैयाकरण सम्बन्ध के मुख्य कारक भेद ना मान के गौण भेद मनले बाड़न। बाकिर हिन्दी आ भोजपुरी के कुछ वैयाकरण लोग के आग्रह के सम्मान करत भोजपुरी में संबंध के कारक भेद मान लिहल बा।

भोजपुरी में सम्बन्धकारक खातिर 'के' परसर्ग लागेला बाकिर जब वाक्य में सम्बन्ध कारक के तीनगो पद लगातार आवेला त पुनरुक्ति दोष मेटावे खातिर पहिला बेरि 'का' आ दोसरा बेरि 'के' के प्रयोग कइल जाला-इनका घर के हाल ठीक नइखे, सुगिया का बेटा के बिआह बा वगैरह।

अधिकरण कारक

व्याकरण में क्रिया व्यापार का आधार के अधिकरण कहल जाला, जइसे-खटिया पर चुनउटी बा। इहवाँ 'खटिया' अधिकरण के उदाहरण बा।

जवना संज्ञा या सर्वनाम से क्रिया का व्यापार के आधार ज्ञात होय, ओकरा के अधिकरण कारक कहल जाला। ई आधार तीन तरह के होला– औपश्लेषिक (एक देशीय), वैषेयिक अभिव्यापक।

भोजपुरी में औपश्लेषिक आ अभिव्यापक आधार खातिर 'में' आ वैषेयिक आधार खातिर 'प' चाहे 'पर' परसर्ग के प्रायः व्यवहार होला, जइसे–

बाघ जंगल में रहेला। (अपश्लेषिक)

घरभरना पलंगरी पर ओठंगल बा। (वैषेयिक)

तिल में तेल बा। (अभिव्यापक)

भोजपुरी में अधिकरण कारक खातिर 'में' 'प' चाहे 'पर' परसर्ग के प्रयोग कइल जाला।

सम्बोधन

भोजपुरी के वैयाकरण सम्बोधन के कारक भेद नइखन मनले। केहू के हाँक लगावे, बोलावें चाहे सम्बोधित करे खातिर एकर प्रयोग कइल जाला, बाकी क्रिया के साथे प्रत्यक्ष चाहे परोक्ष सम्बन्ध ना भइला के कारण एकरा के कारक भेद ना मानल जाय।

बोध प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'कारक' शब्द कवना धातु से बनल बा।

(क) कार (ख) कृ

(ग) कर (घ) रक्

2. भोजपुरी में कारक के कएगो भेद मान्य बा।

(क) नव गो (ख) पाँच गो

(ग) सात गो (घ) एगारह गो

3. 'में' कवना कारक के परसर्ग ह।

(क) अधिकरण (ख) सम्प्रदान

(ग) सम्बन्ध (घ) करण

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. कारक के परिभाषा देत ओकरा भेदन के नाँव लिखीं।
2. कारक का भेद के परिभाषा आ परसर्ग बताईं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. कारक के परिभाषा देत ओकरा भेदन के विभक्ति/परसर्ग सहित परिचय दीं।